ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता का अध्ययन: एक साहित्य समीक्षा

पंकज कुमार दुबे, शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। pankajdu009@gmail.com
डॉ विजेंद्र सिंह, शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग उदित नारायण पीजी कॉलेज, पडरौना, कुशीनगर।

सारांश (Abstract)

शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अभिकर्ता होता है। योग्य एवं गुणवान शिक्षक किसी देश की शिक्षा प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग होते हैं। शिक्षक केवल ज्ञान का स्रोत नहीं होता, अपितु वह विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माता भी होता है। एक योग्य एवं कुशल शिक्षक माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की योग्यता, क्षमता एवं आवश्यकता की परख कर उन्हें जीविका हेतु उचित व्यवसाय या पेशे के चयन में सहायता प्रदान करता है। अतः विद्यार्थियों के भीतर अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि अभिक्षमता के ज्ञान से छात्र में अध्यापन व्यवसाय में भावी सफलता का पता चल सकता है। अभिक्षमता व्यक्ति के उस रुझान, रुचि एवं भावी योग्यता को प्रदर्शित करती है, जो विशिष्ट कार्य पाठ्यक्रम या व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। किसी छात्र की अभिक्षमता को पहचान कर शिक्षक आसानी से उसके भविष्य के निष्पादनों के बारे में पूर्वानुमान लगा सकते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र साहित्य समीक्षा (Review of Literature) पर आधारित है, जिसमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता से संबंधित विभिन्न शोधों, विचारों तथा सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता उनके पारिवारिक वातावरण, विद्यालयीय अनुभव, व्यक्तित्व, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा शिक्षकों के व्यवहार से प्रभावित होती है। साथ ही, सकारात्मक अभिक्षमता भविष्य में प्रभावी शिक्षक निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति रुचि विकसित करने हेतु विद्यालय स्तर पर विशेष प्रयासों की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द — अध्यापन व्यवसाय, अभिक्षमता, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, साहित्य समीक्षा।

1. प्रस्तावना (Introduction)

मनुष्य के सर्वांगीण विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत में अन्य जीवों से अलग करती है। किसी भी देश की प्रगति में उसके प्राकृतिक संसाधनों के साथ ही साथ उसके मानवीय संसाधनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । मानवीय संसाधनों के अंतर्गत उस देश के शिक्षित एवं सुयोग्य नागरिक आते हैं। अतः इसके लिए यह आवश्यक है कि उस देश के नागरिकों को उचित एवं विभिन्न प्रकार की शिक्षा एवं प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अभिक्षमता का अध्ययन कर शिक्षक उनके कैरियर सम्बन्धी भविष्य को एक निश्चित दिशा प्रदान करता हैं। माध्यमिक स्तर एक विद्यार्थी के शैक्षिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पढ़ाव होता हैं।इसलिए अध्यापन व्यवसाय के प्रति विद्यार्थियों की अभिक्षमता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

अभिक्षमता का तात्पर्य किसी कार्य को सफलतापूर्वक करने की संभावित क्षमता से होता है। अध्यापन अभिक्षमता वह विशेष योग्यता है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति शिक्षण कार्य को प्रभावी रूप से संपन्न कर सकता है। यदि माध्यमिक स्तर पर ही विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिक्षमता विकसित हो जाए, तो भविष्य में योग्य एवं प्रभावी शिक्षकों का निर्माण संभव हो सकेगा।

वर्तमान समय में अनेक विद्यार्थी अध्यापन व्यवसाय को केवल रोजगार का साधन मानते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थी इसे सेवा एवं राष्ट्र निर्माण का माध्यम समझते हैं। इस संदर्भ में यह जानना महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता किस स्तर की है तथा कौन-कौन से कारक इसे प्रभावित करते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

शिक्षण मानवीय मूल्यों के विकास पर बल देता हैं, क्योंकि यह एक सामाजिक प्रकिया हैं।एक योग्य एवं कुशल शिक्षक अपने छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नता को स्वीकारते हुए उनकी अंतःक्षमताओ का उचित विकास करता हैं ताकि वे अपने समाज एवं देश के विकास में अपनी सक्रिय भागीदारी दे सके। अतः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अभिक्षमताओं की पहचान कर एक योग्य शिक्षक उन्हें उन्हीं क्षेत्र विशेष में प्रशिक्षित कर सकता हैं।इस प्रकार शिक्षक के मार्गदर्शन द्वारा एक विद्यार्थी अपने भीतर की विशिष्ट योग्यता एवं कौशल की सहायता से अपने इच्छित लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जाता हैं। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित कारणों से भी माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अभिक्षमता का अध्ययन आवश्यक हो जाता हैं -

1. एक योग्य एवं कुशल शिक्षक के निर्माण हेतु विद्यार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता का अध्ययन आवश्यक है।
2. माध्यमिक स्तर भविष्य के करियर निर्माण की आधारशिला होता है।अतः विद्यार्थियों में अपने भविष्य के क्षेत्र विशेष के चुनाव के लिए।
3. विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति रुचि एवं योग्यता के विकास के लिए।
4. शिक्षा में गुणवत्ता की वृद्धि के लिए।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षको की गुणवत्ता पर विशेष बल दिया गया है। अतः यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा के कार्यक्रमों के सुधार में सहायक हो सकता है।

3. अध्यापन अभिक्षमता की अवधारणा

शिक्षक ही समस्त शैक्षणिक प्रक्रिया की धुरी होता हैं। देश एवं समाज को उत्कृष्ट, योग्य एवं कुशल शिक्षक मिले, इसके लिए यह आवश्यक है कि जो भी कोई इस क्षेत्र में आना चाह रहा हों, उनमें शिक्षण कार्य हेतु अभिक्षमता विद्यमान हों क्योंकि बिना शिक्षण अभिक्षमता के कोई भी व्यक्ति अध्यापन व्यवसाय में लम्बी अवधि तक सफल व सक्रिय नहीं हो सकता।

अतः अध्यापन या शिक्षण अभिक्षमता से आशय शिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक करने की स्वाभाविक क्षमता, रुचि एवं योग्यता से है। इसमें संप्रेषण कौशल, नेतृत्व क्षमता, सहानुभूति, धैर्य, विषय ज्ञान तथा विद्यार्थियों को प्रेरित करने की क्षमता इत्यादि सभी सम्मिलित होती है।

बिंघम के अनुसार, "अभिक्षमता किसी व्यक्ति की वह क्षमता है जो उसे विशेष प्रशिक्षण के पश्चात किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने योग्य बनाती है।"

फ्रीमैन के अनुसार, "अध्यापन अभिक्षमता वह योग्यता है जो किसी व्यक्ति को प्रभावी शिक्षण हेतु सक्षम बनाती है।"

इस प्रकार अभिक्षमता व्यक्ति की 'सीखने की योग्यता' को दर्शाती है, जबकि शिक्षण उस योग्यता को 'वास्तविक उपलब्धि और कौशल' में बदलने का काम करता है। शिक्षण और अभिक्षमता के बीच गहरा और पूरक सम्बन्ध है, जहाँ अभिक्षमता किसी व्यक्ति के भीतर छिपी हुई नैसर्गिक क्षमता है वहीं शिक्षण उस क्षमता को निखारने तथा प्रकट करने का माध्यम है। बिना सही अभिक्षमता के प्रभावी शिक्षण संभव नहीं है, और बिना सही शिक्षण के अभिक्षमता का पूरा विकास नहीं हो सकता।

4. अध्यापन अभिक्षमता को प्रभावित करने वाले कारक

अध्यापन या शिक्षण अभिक्षमता अध्यापन पेशे में भविष्य की सफलता का बहुत बड़ा पैमाना मानी जाती हैं। किसी भी व्यक्ति की अध्यापन अभिक्षमता को अनेक प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं। इन सभी कारकों को शिक्षाशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न वर्गों में विभाजित किया है,जो इस प्रकार हैं -

(क) व्यक्तिगत कारक-

इनमें निम्नलिखित कारक सम्मिलित हैं -

1.रुचि
2.व्यक्तित्व
3.आत्मविश्वास
4.संप्रेषण कौशल

(ख) पारिवारिक कारक-

पारिवारिक कारकों में निम्न कारक शामिल हैं -

1.अभिभावकों की शिक्षा
2.पारिवारिक वातावरण
3.सामाजिक समर्थन

(ग) विद्यालयी कारक-

विद्यालयी कारकों में निम्न कारक आते हैं -

1.शिक्षक का व्यवहार
2.विद्यालय का वातावरण
3.पाठय सहगामी क्रियाएं (सहशैक्षिक गतिविधियाँ)

(घ) सामाजिक कारक-

सामाजिक कारकों में निम्न कारक शामिल हैं-

1.समाज में शिक्षक की प्रतिष्ठा
2.रोजगार की संभावनाएँ
3.आर्थिक स्थिति

5. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

1.सैनी (2025) ने विभिन्न पेशेवर पृष्ठभूमि के भावी प्रशिक्षु शारीरिक शिक्षा के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न चर जैसे विद्यार्थियों के प्रति रुचि, शिक्षक अंतःक्षमता और समसामयिक ज्ञान विभिन्न पेशेवर पृष्ठभूमि के प्रशिक्षु शिक्षको के शिक्षण के प्रति अभिक्षमता को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। वहीं शिक्षक व्यवसाय, सामाजिक संपर्क, विद्यालयी गतिविधियों में नवाचार और व्यावसायिक नैतिकता के आधार पर विभिन्न पेशेवर पृष्ठभूमि के प्रशिक्षु शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2.राठीश्वरी एवं अकीला (2022) ने व्यावसायिक नैतिकता के संदर्भ में शिक्षकों की शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता और शिक्षक व्यवसाय के प्रति उनकी अभिक्षमता के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया जाता है। साथ ही शिक्षकों की व्यावसायिक नैतिकता और शिक्षण अभिक्षमता के बीच सार्थक सकारात्मक संबंध पाया गया। कला, विज्ञान और व्यवसायिक शिक्षकों के बीच उनकी व्यावसायिक नैतिकता को लेकर सार्थक अंतर पाया गया।

3. रज़ा, दीबा एवं फ़कीर (2022) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता अधिक थी। समग्र रूप में, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में असार्थक अंतर था। माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों की तुलना में प्राथमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता निम्न स्तर की थी। इसी प्रकार माध्यमिक विद्यालयों के महिला शिक्षकों की तुलना में प्राथमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता उच्च स्तर की थी।

4.रानी (2021) ने बी.एड.प्रशिक्षुओं के शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन किया और पाया कि पुरुष एवं महिला बीएड प्रशिक्षुओ की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। शिक्षण के प्रति अभिक्षमता न केवल प्रशिक्षण के स्तर एवं गुणवत्ता पर निर्भर करती है ,बल्कि प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रशिक्षुओ को प्रदान किए जाने वाले शिक्षण दक्षता का प्रशिक्षण, विभिन्न शिक्षण कौशलों का प्रशिक्षण, प्रशिक्षुओ को प्रदान की जाने वाली अधिगम क्रियाएं और प्रशिक्षुओ को दिया जाने वाला मार्गदर्शन भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता को प्रभावित करते हैं।

5.मालिशेट्टी एवं विजयलक्ष्मी (2020) ने कोविड 19 के दौरान डिजिटल शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति और अभिक्षमता का अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि तकनीक संपन्न, विशेष कर कंप्यूटर आधारित कौशल से युक्त शिक्षकों की डिजिटल शिक्षण के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई ।साथ ही ईमेल, इंटरनेट, एमएस ऑफिस, टाइपिंग कौशल जैसे कारकों ने डिजिटल शिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिक्षमता को प्रभावित किया।

6. सोनो एवं त्यागी (2019) ने अपने अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की सामान्य जागरूकता, बुद्धि एवं शिक्षण अभिक्षमता के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की सामान्य जागरूकता और उनकी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता में कोई अंतर नहीं था। किंतु ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की बौद्धिक क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही लैंगिक आधार पर महिला एवं पुरुष शिक्षकों की बौद्धिक योग्यता एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

7. रॉय एवं गोयल (2018) ने अपने शोध कार्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं अभिक्षमता का अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति या दृष्टिकोण एवं अभिक्षमता में घनिष्ठ से सहसंबंध होता है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति या दृष्टिकोण विद्यार्थियों में सहयोग, उत्तरदायित्व एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व की आधारशिला रखती है। वही वैज्ञानिक अभिक्षमता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता में वृद्धि करती है।

8. जैन (2018) ने अपने शोध अध्ययन में यह पाया कि उच्च बुद्धि लब्धि एवं निम्न बुद्धि लब्धि वाले बी.एड.प्रशिक्षुओ की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अंतर होता हैं। जबकि शिक्षण अभिक्षमता में लिंग की कोई सार्थक भूमिका नहीं होती। व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि शिक्षण अभिक्षमता को प्रभावित करती है।

9. जार्ज (2017) ने प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच शिक्षण अभिक्षमता पर अध्ययन किया और यह पाया कि प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के बीच शिक्षण अभिक्षमता को लेकर कोई सार्थक अंतर नहीं था। विवाहित और अविवाहित शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता के स्तर में सार्थक अंतर था। साथ ही शिक्षण अनुभव एवं लैंगिक आधार शिक्षण कार्य के प्रति शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता के स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

10.मेनका (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि महिला प्रशिक्षु शिक्षिकाएं, पुरुष प्रशिक्षु शिक्षकों की तुलना में श्रेष्ठ थी। किंतु समग्र रूप में लिंग के आधार पर महिला प्रशिक्षु शिक्षिकाओं एवं पुरुष प्रशिक्षु शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एक श्रेष्ठ शिक्षण अभिक्षमता वाला व्यक्ति अवश्य ही अच्छा शिक्षक हो सकता है। अतः प्रवेश परीक्षा के रूप में एक शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विकास एवं सुधार के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

11. मुच्छल एवं कुमार (2016) ने अपने शोध अध्ययन में यह पाया कि सरकारी और निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। साथ ही उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के पुरुष शिक्षको एवं महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण अभिक्षमता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

12. गोंडी (2015) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन किया तथा शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का संबंध उनके कार्य संतुष्टि, सामाजिक समायोजन और व्यक्तित्व कारकों से संबंधित पाया।

13. अंजलि (2015) ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालय शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता एक दूसरे से भिन्न थी। उनके सहयोगी स्वभाव विषयगत गंभीरता व्यापक रुचि एवं उपलब्धि को लेकर भिन्नता पाई गई।

14. मलिक (2015) ने बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षु अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति उच्च अभिक्षमता एवं शिक्षण दक्षता के बीच सार्थक संबंध पाया जाता है। साथ ही बौद्धिक क्षमता एवं शिक्षक व्यवसाय के प्रति उच्च अभिक्षमता के बीच भी सार्थक संबंध पाया जाता है। बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के संदर्भ में बी.एड. पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओ की शिक्षक अभिक्षमता में महत्वपूर्ण सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

15.चंदेल एवं धीमान (2014) ने अपने अध्ययन में भावी शिक्षको (प्रशिक्षु शिक्षक) की शिक्षण अभिक्षमता का विश्लेषण किया। शोधकर्ताओं ने पाया की भावीं शिक्षकों में शिक्षण अभिक्षमता का स्तर मध्यम से उच्च श्रेणी में पाया गया। जो यह संकेत देता है कि अधिकांश प्रशिक्षु शिक्षक, शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। शिक्षण अभिक्षमता, भावी शिक्षकों की भविष्य की शिक्षण दक्षता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। जिन प्रशिक्षु शिक्षकों में उच्च शिक्षण अभिक्षमता पाई गई उनमें आत्मविश्वास, नवाचार तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्धता अधिक देखी गई।

6. साहित्य समीक्षा से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

समीक्षित अध्ययनों से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

- अध्यापन अभिक्षमता शिक्षण प्रभावशीलता से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है।
- पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की अभिक्षमता को प्रभावित करता है।
- छात्राओं में छात्रों की तुलना में अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई।
- विद्यालय का वातावरण एवं शिक्षक व्यवहार विद्यार्थियों की शिक्षण रुचि को प्रभावित करते है।
- सकारात्मक अभिवृत्ति (दृष्टिकोण) एवं आलोचनात्मक चिंतन अध्यापन अभिक्षमता को बढ़ाते हैं।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में अभिक्षमता विकास पर पर्याप्त ध्यान आवश्यक है।
- साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता केवल जन्मजात क्षमता नहीं बल्कि सामाजिक एवं शैक्षिक अनुभवों से विकसित होने वाली योग्यता है। यदि विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को शिक्षण संबंधी गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाएँ, तो उनमें अध्यापन व्यवसाय के प्रति रुचि एवं योग्यता विकसित की जा सकती है।
- आज के समय में तकनीकी एवं डिजिटल शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण शिक्षकों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे में विद्यार्थियों की अध्यापन अभिक्षमता का विकास शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता सुधारने में सहायक सिद्ध होगा।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत साहित्य समीक्षा आधारित अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिक्षमता का विकास भविष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों की अभिक्षमता उनके व्यक्तित्व, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयीय वातावरण एवं सामाजिक दृष्टिकोण से प्रभावित होती है। अतः विद्यालयों एवं शिक्षक शिक्षा संस्थानों को विद्यार्थियों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं अभिक्षमता विकसित करने हेतु विशेष कार्यक्रम संचालित करने चाहिए।

8. सुझाव (Suggestions)

1. साहित्य समीक्षा एवं शोध अध्ययनों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं -
2. विद्यालयों में शिक्षण व्यवसाय संबंधी मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. विद्यार्थियों को शिक्षण गतिविधियों में सहभागिता के अवसर दिए जाएँ।
4. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में अभिक्षमता विकास को प्राथमिकता दी जाए।
5. अध्यापन व्यवसाय की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के प्रयास किए जाएँ।
6. विद्यार्थियों में नेतृत्व एवं संप्रेषण कौशल विकसित किए जाएँ।

9. संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. Saini, S. (2025). Teaching Aptitude Among Prospective Pupil Teachers from Diverse Professional Background. Anusandhanvallari, 1729-1764.
2. Ratheeswari, K., & Akila, R. (2022). Teaching aptitude of teacher educators in relation to their professional ethics. International Journal of Health Sciences, 6(S8), 55-64.
3. https://doi.org/10.53730/ijhs.v6nS8.10249
4. Raza, M. A., Deeba, F., & Faqir, R. (2022). A comparative analysis of school teachers' teaching aptitude. Global Educational Studies Review, 7(3), 45-52.
5. Rani, S. (2021). A study of teaching aptitude among B. Ed students
6. Mallisetti, V. I. L. (2020). Aptitude and attitude of teachers towards digital teaching in India during covid-19 lockdown. Multilogic in Science.
7. Sono, R., & Tyagi, T. (2019). A Study of Teaching aptitude, Intelligence and general Awareness of Secondary School Teachers.
8. Roy, D., & Goel, N. (2018). A study of scientific aptitude and attitude in the secondary students. International Journal of Advanced Research and Development, 3(2), 338-341.
9. Jain, M. (2018). Teaching aptitude of pupil teachers in relation to their intelligence, gender and locality. International Journal of Research in Social Sciences, 8(1), 1024-1034.
10. George, N. (2017). Teaching Aptitude among Primary and Secondary School Teaching Professionals. Indian Journal of Community Psychology, 13(11).
11. Menka, M. (2016). Teaching aptitude of trainee teachers: An investigation. International Journal for Innovative Research in Multidisciplinary Field, 2(12), 144-149.
12. Muchhal, M. K., & Kumar, A. (2016). A Study of Teaching Aptitude of Science Teachers of Senior Secondary Schools. International Journal of Indian Psychology, 3(2).
13. Gondi, M. S. (2015). A Study of Teaching Aptitude of Secondary School
14. Teachers in Relation to their Job Satisfaction, Social Adjustment and Personality Factors. (Published Ph.D Thesis). (Education), Karnataka State Women's University.
15. Anjali, D. (2015). A Comparative Study of Teaching Aptitude and Job
16. Satisfaction Levels of Rural and Urban School Teachers. International
17. Journal of Indian Psychology Vol.3 (1).
18. Malik, U. (2015). A STUDY OF TEACHING APTITUDE OF B. ED PUPIL TEACHERS IN RELATION TO THEIR TEACHING COMPETENCY AND INTELLIGENCE (Doctoral dissertation, MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY ROHTAK).
19. Chandel, K. S., & Dhiman, R. J. (2014). Teaching aptitude among prospective teachers. Academic Discourse: An International Journal, 7(1), 1-16.
20. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता अलका (2008), उच्चतर शैक्षिक मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
21. मंगल, एस. के. (2000), शिक्षा मनोविज्ञान, ए. पी. एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
22. मिश्रा, आर. सी. (2009), एन साइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, वॉल्यूम–3, ए. पी. एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
23. शर्मा, आर. ए. (2006), अध्यापक शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
24. शर्मा, आर. ए. (2008), शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
25. सिंह, अरुण कुमार (2007), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना।
26. सारस्वत, मालती (2019), शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।